प्रिय भाई 'सोपान' को

वड़े म्याँ

दृश्य पहला

[गाँव का शफाखाना, समय प्रातः काल । शेरगढ़ का सरकारी शफाखाना । एक तिमंजले मकान के सामने एक चौक में नीम का वृक्ष खड़ा है । वृक्ष के नीचे एक लम्बे चौरस टेबल के तीन ओर कुर्सियाँ जमी हुई हैं । चौथी ओर एक लकड़ी की बेंच मरीज़ों के बैठने के लिए पड़ी हुई है । दाहिनी ओर छोटी-सी खिड़की है जिसमें से मरीज़ लोग दवाइयाँ लेते हैं । टेबल पर एक ...टलाग, दो-चार मोटी पुस्तकें, दावात-कलम
कुरसी पर डाक्टर साहब बैठते हैं

शशि—आर-ए-टी-रेट—रेट माने चूहा। सी-ए-टी-केट—केट माने बिल्ली। केट माने बिल्ली, रेट माने चूहा। केट माने चूहा—रेट माने बिल्ली। ऊँह याद ही नहीं होता है। उस दिन दादा कितना अच्छा गा रहे थे? क्या गा रहे थे? बालम? हाँ हाँ। गाऊँ तो सही। (गाता है) बालम आय बँसो मोरे मन में। आय बँसो मोरे मन में।

सावन आया तुम न आये,
मन में मोरे हूक उठत है—
आय बँसो मोरे मन में।

(प्रवेश शिरीष—शशि का बड़ा भाई)

शिरीष—यूँ? तुम क्या कर रहे हो जी? गाने की भी तमीज़ है कि नहीं?

शशि (एकाएक खड़ा होकर) जी?

शिरीष—जी-ई ई! मैं पूछता हूँ जब तुम्हें गाना नहीं आता फ़िज़ूल चिल्लाते क्यों हो? बीच में अपनी टाँग क्यों अड़ाते हो?

शशि—जी सबक गा रहा था।

शिरीष—गा रहा था। न तुममें तमीज़ है गाने की न शब्दों को ठीक बोलने की। अच्छा बताओ यह गायन तुमने कहाँ से सीखा?

शशि—जी उस दिन शाम को आप तालाब की पाल पर

बैठे हुए गा रहे थे—मैंने सुना—मुझे इच्छा हुई मैं भी गाऊँ।

शिरीष—हूँ ! तुम अपने बड़े भाई साहब के पीछे-पीछे घूमते हो, और उनके गायन सुनते हो क्यों ?

शशि—जी-जी-नहीं। कल...हरिया, मैं टहलने जा रहे थे तालाब के किनारे। हमने सुना कोई गा रहा है। उधर चल दिये। इमलियों के झुरमुट में से देखा आप गायन ललकार रहे हैं। मैंने कहा हरिया, दादा कैसा अच्छा गाते हैं ? हरिया ने कहा—हाँ भई ! तुम्हारे दादा शहर की बड़ी इस्कूल में जो पढ़ते हैं—और जनाब वहाँ बड़े-बड़े सेनिमा थीएटर जो देखते हैं। वे न गायँगे तो क्या हम और तुम गायेंगे ?'

शिरीष—अच्छा तो तुम्हें गायन पसन्द आया ?

शशि—जी।

शिरीष—जानते हो कौन गाता है इसे ?

शशि—जी नहीं।

शिरीष—हाँ सच तो है—तुम कैसे जान सकते हो ? इस शेरगढ़ में न सिनेमा है न थिएटर। तुम सुनना चाहते हो ?

शशि—जी।

शिरीष—सुनो ! तुम बिलकुल गलत गाते हो। यों गाना चाहिये। (बेसुरे आवाज़ में गाने लगता है)।

बालम आय बसो मोरे मन में।
सावन आया तुम न आये
आय बसो मोरे मन में।
मन में मोरे हूक उठत अब,
कोयल कूकत बन में।
आय बसो मोरे मन में।

शशि—वाह! भई वाह!

शिरीष—यह तो एक ही गायन गाया मैंने। ऐसे तो मैं पचासों गायन जानता हूँ पचासों।

शशि—अच्छा? आप इतने गायन कैसे सीख गये?

शिरीष—तुम नहीं समझ सकते अभी बच्चे हो। गाँव के लड़के शहर के लड़कों से भला क्या मुकाबला कर सकते हैं।

शशि—जी।

शिरीष—देखो यह दूसरा गायन। बैसा हा मजेदार।

(बेसुरे राग में गाता है)

सुनो सुनो मैं बन की रानी,
सुनो सुनो मैं बन की रानी।
मन्त्री तुम एरयर बन जाना!
राज काज में बाधा देना।
सुनो सुनो मैं बन की रानी॥टेक॥

शशि—वाह वाह !

(प्रवेश वडे म्याँ, म्युनिसिपैलिटी के जमादार ।)

बडेम्याँ—क्यों भैया साहव ! क्या हो रहा है ?

शिरीष—क्यों बडे म्याँ करेले ले आये ?

बडे म्याँ—लाहौल विला कुव्वत ! अजी भैया साहब क्या आप भी ऐसी नापाक चीज़ का नाम सुबह-सुबह लिया करते हैं । तौबाह ! तौबाह !

शशि—पर बडे म्याँ वह तुम्हारे सुआफे मे जो करेला रखा हुआ है ।

बडे म्याँ—(साफे को ज़मीन पर फेंककर) लाहोर में विल्ली कूद पड़ी । क्या करूँ इस बदज़ात चीज़ को । इसकी टाँग तोड़ डालूँ ? गरदन मरोड डालूँ ? इस साले साफे को भी पानी से धोना पडेगा ।

शिरीष—पर बडे म्याँ !

बडे म्याँ—अजी आग लगाइये इस बडे म्याँ को और इस नापाक बदज़ात चीज़ को । आपको भी क्या मज़ाक सूझता है भैया साव ?

शशि—अजी उस पानी में—

बड़े म्याँ—हत्तेरे करेले की नानी मरे ।

(प्रवेश—डाक्टर साहब हाथ में बेंत घुमाते हुए, मूँछों पर

लाब देते हुए। लहरियेदार साफा, चूड़ीदार पायजामा, और लम्बा कोट पहना है। उन्हें आते देख दोनों बालक खड़े हो जाते हैं और भाग जाते हैं)

बड़े म्याँ—आदाब अर्ज़ हुज़ूर!

डाक्टर सा०—बड़े म्याँ! इनको देख आये?

बड़े म्याँ—देख आया क़िबले।

डाक्टर—शिरीष शशि!

(दोनों का प्रवेश हाथ जोड़ते हुए)

डाक्टर—क्या कर रहे थे?

दोनों—जी जी बैठे थे।

डाक्टर—जाओ अपना सबक़ याद करो।

(दोनों का प्रस्थान)

डाक्टर—बड़े म्याँ! घन्नामी सेठ की बगीची साफ करवा आये?

बड़े म्याँ—जी हुज़ूर।

डाक्टर—और मन्नामी सेठ की तख्ती?

बड़े म्याँ—जी वह भी।

डाक्टर—बहुत अच्छा! कितने भंगी ले गये थे?

बड़े म्याँ—दस क़िबले।

डाक्टर—कम्पाउण्डरजी आ गये?

बडे म्याँ—शायद आगये है।

डाक्टर—मरीज़ ?

बडे म्याँ—कोई नहीं।

डाक्टर—यहाँ की पब्लिक वड़ी सुस्त है। न पैदाइश न कुछ। समझ मे नहीं आता यहाँ के लोग क्यों इतने मक्खीचूस हैं ? यहाँ पर तबदीली हुई, इसके पहिले अनेकों गाँव, परगनों में घूमा हूँ—पर यहाँ की जैसी पब्लिक कहीं न देखी।

बडे म्याँ—आप बिलकुल ठीक फरमाते है क़िबले। यहाँ के लोग—चाग ही ऐसे हैं। पर एक दिन इस शेरगढ़ का भी बोल-बाला था हुजूर! शहर में सवारी निकलती थी। महाराजा साहब खुद इस अपने शफाखाने में पधारते थे, और रंडियों का नाच होता था।

डाक्टर सा०—अच्छा? तो महाराजा साहब खुद यहाँ पधारते थे ?

बडे म्याँ—हाँ क़िबले! यहाँ आते थे और इस दरख़्त के नीचे, जहाँ आप बैठे हैं कुर्सी पर बैठते थे, और फिर साहब रंडियो का नाच होता था—और डाक्टर साहब के ही घर खाना पकता था, बड़ी चहल पहल रहा करती थी—बस मत पूछो।

डाक्टर—उस जमाने में तो तुमने खूब देखा भाला होगा

बडे म्याँ—और महाराजा साहब की निगाह भी अच्छी रही होगी।

बड़े म्याँ—क्या कहूँ उन दिनों की बात हुज़ूर ! इस बड़े म्याँ का भी बोल-बाला था उस ज़माने में। बड़े म्याँ महाराजा साहब के दाहिने हाथ थे। शिकारी पार्टी का तमाम काम और बदोबस्त इस ख़ादिम के हाथ में था। एक दिन की बात याद आती है हुज़ूर ! बस होरी के दिन थे। महाराजा साहब का सवारा निकली। ऊँट और हाथी घोड़े और प्यादे आ रहे हैं। और सवारी आ पहुँचा शफ़ाख़ाने के पास ! क़िबले बस क्या कहूँ ! सारंगी बज रही है—तबले दुमुक रहे हैं और शीरींजान बस नाच रही हैं—मुजरा ले रही है और महाराजा साहब बोले— अरे डाक्टर—चालेगो रे शकार !'

बस क्या था डाक्टर साहब तैयार हो गये। आ रहे हैं, और आ पहुँचे एक बयाबान जंगल में। हाँका पड़ गया है—दरख़्तों में सब थड़ गये हैं—और इतने में निकला शेर बब्बर ! महाराज साहब ने कहा—बड़े म्याँ मैंने कहा—सरकार। वे बोले— 'चलने दे और ठें ठें और चित्त कर दिया साले को !

डाक्टर—वाह वाह वाह वाह !

बड़े म्याँ—अब क्या धरा है क़िबले ! वे दिन तो गये।

डाक्टर—हाँ ! पर बड़े म्याँ ! इन धन्नाजी मन्नाजी को ठीक नहीं कर सकते !

बड़े म्याँ—क्यों नहीं क़िबले ! चुटकियों में ! उसमें कौन-सी

बड़ी बात है। दोनो सेठजी नाम के भूखे है—नाम के। बस उन्हें अगर नाम मिल गया तो बस .और फिर चबूतरे का झगड़ा भी तो अपने पास है। सब कागजात अपने पास हैं।

डाक्टर सा०—हाँ बात तो ठीक है।

बडे म्याँ—तो सब ठीक हो जायगा क़िबले। मैं सब ठीक कर लूँगा। अच्छा इज़ाजत लूँगा। आदाब अर्ज़।

(प्रस्थान)

परदा गिरता है।

दृश्य दूसरा

[गाँव के मध्य में एक तंग गली में मन्ना जी का घर। दालान का भाग। एक ओर खटिया पड़ी है। एक कोने में दो तीन बरतन अस्तव्यस्त पड़े हैं। एक झाड़ू भी पास ही पड़ा हुआ है। मन्नाजी खटिया के पास टहलते और कुछ हिसाब मिलाने में व्यस्त-से दिखाई देते हैं। खाट पर बही-खाता, दावात और कलम रखे हैं। दूसरे में हरिया बैठा बैठा गन्ना चूस रहा है। थोड़ी दूर तुलसीराम सिल-बट्टे पर भंग पीस रहा है।]

मन्नाजी—एक दो चार—चार—चार—चार और चार आठ।

कक्का रे केवड्यो धन्नाजी को सेवड्यो। आठ, आठ आठ और चार बारह-बारह-बारह चोईस—चोईस-चोईस-चोईस—छिः यह साला हिसाब ही नहीं मिलता।

(बाहर से आवाज़)—मन्नाजी सेठ! ओ मन्नाजी सेठ!

मन्नाजी—हरिया।

हरिया—कई है?

मन्नाजी—अरे देख तो यह कौन बुला रहा है?

हरिया—होगा कोई। (गन्ना चूसने लगता है—तुलसीराम की ओर देखकर) अरे तुलसीराम देख तो!

तुलसी—(पीसते-पीसते) तेरी टाँग टूट गई है? जा देख आ तू ही।

बाहर से आ०—अजी सेठजी, ओ सेठजी!

मन्नाजी—अरे हरिया के बच्चे! देख तो कौन है?

हरिया—अरे तुलसी! सुनता नहीं, जा देख तो।

तुलसी—अरे देखता नहीं भंग जो पीस रहा हूँ—उठता नहीं और बैठा-बैठा गन्ना चूस रहा है। देखा न हजूर, न कुछ काम करता है न धन्धा, बैठा-बैठा गन्ना चूस रहा है—जा।

हरिया—काम नहीं करता? भाजी लेने कौन गया? दवाई लेने शफाखानें कौन गया? तेरा दाजी?

तुलसी (खड़ा होकर, गुस्से में हाथ जोड़ते हुए) आता मेरे काकाजी।

(प्रस्थान—कुछ देर बाद प्रवेश)

हरिया—(गन्ना मुँह से निकालकर) कौन है ?

तुलसी—बमपुलिस के जमादार।

हरिया—(गन्ना फेंक एक दम खड़ा होकर) एँ पुलिस जमादार ?

मन्नाजी—अरे तुलसी ! यह क्या गड़बड़ी है ? क... आया है ?

तुलसी—सरकार बाहर बमपुलिस के जमादार खड़े हैं।

मन्नाजी—एँ ! पुलिस के जमादार ?

तुलसी—हाँ सरकार।

मन्नाजी—अरे ! हमने कोई चोरी का है—छिनाली की है—भाड़ा पाड़ा है ? हमारे घर पुलिस का जमादार क्यों आने लगा ?

तुलसी—पर आया है सरकार मैं क्या करूँ ?

मन्नाजी—अरे हरिया के बच्चे देख तो सचमुच !

(प्रवेश—बड़े म्याँ)

बड़े म्याँ—आदाब—अज़ !

मन्नाजी—आ-हो—आइये आइये बड़े म्याँ। मैं तो डर के मारे मर गया !

बड़े म्याँ—क्या हुआ क़िबले क्या हुआ ?

मन्नाजी—तुलसी बोला पुलिस के जमादार आये हैं।

बड़े म्याँ—अह—ह-ह .

तुलसी—सरकार मैंने तो कहा बमपुलिस के जमादार।

बड़े म्याँ—अह-ह-ह—सच तो है बम पुलिस के ही तो जमादार ठहरे—अह-ह-ह.

मन्नाजी—कैसे याद किया बड़े म्याँ ?

बड़े म्याँ—बात कुछ टेढी है पिराइवेट में कहूँगा।

मन्नाजी—पिराइवेट ?

बड़े म्याँ—ए आपके शाहजादे साहब और इन महाराज को जरा.. ' (चुटकी से बाहर जाने का इशारा करता है)

मन्नाजी—हो-हो। अरे हरिया तुलसी जरा बाहर जाना रे।

तुलसी—जी सरकार।

हरिया—ओ-ओ—

(दोनों का प्रस्थान)

मन्नाजी—बैठिये—बैठिये न दरोगाजी।

बड़े म्याँ—नहीं नहीं बैठने की कोई जरूरत नहीं है। पर एक बात कहनी है। मामला बडा टेढ़ा हो गया है।

मन्नाजी—कौन-सा मामला ?

बड़े म्याँ—अजी वही चबूतरेवाला।

मथाजी—हाँ। पर देखो दरोगा साहब! आपको टेक रेखो चाहिये। कुछ भी हो जाय हाँ।

बड़े म्याँ—हाँ हाँ यह तो मैं भी समझता हूँ। पर आपको पता नहीं वह मथुरा हलवाई बड़ा उस्ताद है। सुना है उसने मिठाइयों का एक थाल और डेढ़ सौ रुपए नक़द डाक्टर साहब के पास भिजवाए हैं। और यह तो आप जानते ही हैं कि सारा मामला उनके हाथ में है—वे ही म्युनिसिपैलिटी के प्रेसीडेंट हैं।

मथाजी—पर दरोगाजी! ऐसा हो ही कैसे सकता है? वह चबूतरा बन ही कैसे सकता है? दस्तावेज़ के अन्दर तो कोई लिखा पढ़ी मेरे ख़याल से है नहीं। और गली तो सरकार की है—उसके बाप की तो है नहीं।

बड़े म्याँ—हाँ हाँ यही तो मैं भी कहता हूँ। यह कैसे हो सकता है? पर मामला कुछ टेढ़ा है। चबूतरा पहिले से बना है सिर्फ़ वह अब कुछ बड़ा बना रहा है। आजकल तो जो कुछ ओमाइट साब ने कह दिया वही सच। पर तुम आप तो जानते ही हैं कि डाक्टर साहब तो मेरे ही हाथों में हैं पर मामला ऐसे वैसे थोड़े ही ठीक हो सकता है?

मथाजी—तो कैसे हो सकता है?

बड़े म्याँ—मैं बताऊँ?

मथाजी—हाँ!

बडे म्याँ—आप और धन्नाजी दोनों मिलकर डाक्टर साहब के पास जाओ और कुछ नजराना-वजराना—हूँ—मामला यों ठीक हो जायगा।

मन्नाजी—पर बडे म्याँ! तुम देखते हो हम तो अब बूढे हुए और धंधा-रुजगार कुछ चलता नहीं।

बड़े म्याँ—अच्छा ख़ैर! तो मै इज़ाज़त लेता हूँ सेठजी!

मन्नाजी—अजी वाह! क्या है इतनी जल्दी। पान-वान तो लो।

(प्रवेश—धन्नाजी)

धन्नाजी—यह सुसरी मुन्नो की माँ! मिल जाय तो टाँग ही तोड़ डालूँ—गरदन ही मरोड डालूँ—सुसरी कहीं की।

मन्नाजी—धन्नाजी?

धन्नाजी—हाँ मन्नाजी!

मन्नाजी—बड़े म्याँ आये हैं।

धन्नाजी—एं! क्यों आये हैं?

मन्ना—उसी चबूतरे के मामले में।

धन्नाजी—हाँ! तो बड़े म्याँ क्या देर है? लगा दो गोली बस सुसरे मथुरिया को। कुछ भी हो जाय पर चबूतरा बणने न पाय हूँ।

बड़े म्याँ—वाह! क्या कही? पर जनाव मैं तो कह चुका जो कुछ कहना था। मामला सारा तुम्हारे हाथ है।

धन्ना—क्या मामला? मैं भी तो सुनूँ।

बड़े म्याँ—मैं कहता हूँ—कोई फूल की टोकरी है कुछ मेवे मिठाइयाँ हैं—भिजवाइये डाक्टर साहब के घर, और उनसे मुलाक़ात कीजिये। कुछ थैली वैली हैं—जानते हो उस मथुरिये के बच्चे ने—नक़द डेढ़ सो रुपए हैं।

धन्ना—पर बड़े म्याँ! डांगडरजी तो रिशवत विशवत नहीं लेते।

बड़े म्याँ—हाँ हाँ—मैं कहाँ कहता हूँ रिशवत लेते हैं। उनके बच्चे तो मिठाई खा सकते हैं। भलेमानसों उनके बच्चों के हाथ में तो रख सकते हो। भाई यह बोझा मेरे सर। तुम तो रुपए ढाई सौ ठीक कर लो।

मन्नाजी—ढाइ सो?

धन्नाजी—लगाओ गोली ढाई सो क। वाह यह भी क्या? नाम तो रह जायगा। भाई टेक तो रह जायगी। उस ससुरे मथुरिया को भी तो पता पड़ जाय की शेरगढ़ के महाजनों से मुठभेड़ करना कौड़ियों का खेल नहीं। हाँ बच्चाजी याद करे याद! बता दूँ बचाजी को हूँ।

बड़े म्याँ—बस तो फिर क्या देर है? सेठ साब! समझ लो मामला पार है।

दोनों—हाँ हाँ ! परवाह मत करो ।

वड़े म्याँ—अच्छा तो आदाव अर्ज़ ।

दोनों— आधा मरज । आधा मरज ।

(प्रस्थान—वडे म्याँ)

धन्नाजी—अच्छा तो मैं जाता हूँ । दरसन परसन करणा है ।

मन्नाजी—अच्छा ।

(प्रस्थान—धन्नाजी)

(प्रवेश—शेठाणीजी)

मन्नाजी—रोटी पका ली ?

शेठाणीजी—रोटा खावगा के भाटा मूँ पूछू हुं अणा के साथ थें काई बातॉ कर रह्या छा जी ?

मन्नाजी—वातें ? कुछ भी तो नहीं ।

शेठाणी—ए घणो हरामी मनक है यो थांको वडो म्यॉ । मूँ के दूँ हूँ हाँ—हूँका केणा में आया तो डाढ़ी मूच्छ्यॉ उखेड लूँगी हूँ ।

मन्नाजी—नहीं नहीं, मैं ऐसा उल्लू थोड़े ही हूँ । वड़े म्यॉ वडे म्याँ कौन से वाग़ की चिड़िया हैं ।

शेठाणीजी—ओर वू धन्नो शेठ कसॉ आयो छो ?

मन्नाजी—धन्नाजी ? ओ वो तो मेरे दोस्त हैं, मुझी से मिलने आये थे ।

शेठाणी—ए—मथुरिया हलवाई का चबूतरा की बात पड्या हो तो घर छोड़ भाग जाऊँगी। हूँ क दू हूँ—जास जाय चबूतरो और नरक में जाय थाँको धन्नो जी!

शेठजी—नहीं नहीं। तुम कोई चिंता मत करो। स ठीक हो जायगा। सब ठीक हो जायगा!

(परदा गिरता है)

तीसरा दृश्य

[दृश्य पहले सीन का। डाक्टर साहबवाली कुर्सी पर शशि बैठा-बैठा सबक याद कर रहा है]

शशि—बड़ी परेशानी है। कुछ समझ में ही नहीं आता। घर में रहते हैं तो पिताजी अँग्रेजी पढ़ा-पढ़ाकर नाक में दम कर देते हैं! और उधर इस्कूल में जाते हैं तो मास्टर साब रटा-रटा कर दम निकालते हैं। चलो भई, कविता याद कर डालूँ।

हे पिरभो आनन्द दाता
ज्ञान हमको दीजिये।

शीघ्र सारे दुर्गुणों को,
दूर हमसे कीजिये ॥
लीजिये हमको शरण में
हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक
वीर व्रतधारी बनें ॥
(रटता है)

(प्रवेश—हरिया हाथ में भौंरा और डोरी लिये)

हरिया—क्यों भौंरा खेलना है ? क्या कर रहे हो बैठे-बैठे ?

शशि—भई कविता याद कर रहा हूँ। साली याद ही नहीं होती।

हरिया—कौनसी कविता ?

शशि—हे प्रभो आनंद दाता—

हरिया—वाह ! यह कविता याद नहीं होती ? बड़ी सहज है।

शशि—तुम्हें याद है ?

हरिया—हाँ-ओ। क्यों नहीं ?

शशि—अच्छा तो सुनाओ।

हरिया—सुनाऊँ ?

शशि—हाँ ।

हरिया—सुना ही दूँ ।

शशि—हाँ हाँ ।

हरिया—अरे यार ! क्या धरा है उस कविता में ? अच्छा फिर सुनायेंगे । अभी भौंरा खेल ले । चलो ।

शशि—ना भई ! मुझे नहीं खेलना । अभी कविता याद करनी है—फिर पिताजी का इंग्लिश रटना है ।

हरिया—वाह अंग्रेजी तो यों मिन्टो में याद होता है। उसमें डरने की क्या बात है भला ?

शशि—नहीं माफ करें, मैं खेलना नहीं चाहता ।

हरिया—अच्छा भई ! तुम्हारी मरजी । पर तुमने हमारे क्लास की कविता नहीं सुनी ?

शशि—नहीं पर पहिले मेरे वाली ही कविता सुना दो न ?

हरिया—अच्छा लो तो सुनलो—

हे प्रभो आनंद दाता ।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को ॥

शशि—गलत गलत !

हरिया—वाह ग़लत कैसे ? खुद को तो आता नहीं, और योंहीं बीच में टाँग अड़ाते हो ।

शशि—वाह—किताब में बताऊँ ?

हरिया—नहीं देखनी किताब।

शशि—क्यों झेंपते हो लाला अब ?

(प्रवेश—शिरीष)

शिरीष—यह क्या गड़बड़ मचा रक्खा है जी तुमने ?

(शशि कुर्सी पर से उठ जाता है। शिरीष उसी पर बैठ जाता है—और मेज पर पड़े रूलर को उठाता है।)

शिरीष (रूलर को मेज पर ठपकारकर) हरिया ? क्या शोर मचा रहे थे जी तुम ? तुम्हें याद नहीं मैं ऊपर अपनी अँग्रेजी कविता याद कर रहा था ? हमारी पढ़ाई में डिस्टर्ब करते शर्म नहीं आती ?

हरिया—जी। हमलोग अपना सबक याद कर रहे थे। शशि भैया अपनी कविता याद कर रह थे।

शिरीष—हाथ में भौंरा लेकर कविता याद की जाती है क्यों ?

हरिया—(चुप रहता है)

शिरीष—मैं कहता हूँ—अगर तुम लोग शहर में आओ तो पता चले सबक किस तरह याद किया जाता है। सबक याद करना बच्चों का खेल नहीं। हाथ में भौंरा है और सबक याद कर रहे हैं। पता भी है, रात रातभर जगकर रटा करते हैं तब बड़ी मुश्किल से सबक याद होता है। सबक याद करते हैं।

तुम लोग क्या सबक याद कर सकते हो ? चोटी बाँधकर रट लगाओ—रात के दो दो बजे तक जागो—ऊँघ आवे तब दौड़ लगाओ—चाय पीओ—गालों पर चाँटे लगाओ—तब मुश्किल से सबक याद होता है।

(प्रवेश—बड़े म्याँ)

बड़े म्याँ—भैया साब ! डाक्टर साहब आ रहे हैं।

शिरीष—अभी ही ? शहर में चक्कर लगा आये।

बड़े म्याँ—जी हाँ—और बड़े गुस्से में हैं !

शिरीष—अच्छा ? चलना चाहिये।

हरिया—भागो।

शशि—दौड़ो।

(तीनों का भाग जाना)

डाक्टर सा०—बड़े म्याँ !

बड़े म्याँ—क़िबले।

डाक्टर सा०—कम्पाउंडरजी क्या कर रहे हैं ?

बड़े म्याँ—शफ़ाख़ाने में शायद दवाई बना रहे हैं।

डाक्टर सा०—ज़रा बुलाओ तो।

बड़े म्याँ—लाया क़िबले।

(प्रस्थान)

डाक्टर—बड़ा भारी मर्ज़ है (किताबों को उठा, पन्नों को

टकन्ते हुए) बुखार है। न्यूमोनिया के सिम्पट्म्स्। पचता नहीं भूख जाती नहीं। भूख लाना होगा।

(प्रवेश—बड़े म्या कम्पाउडरजी के साथ)

कम्पा०—फरमाइये साहब।

डाक्टर—कम्पाउडरजी! अपने यहाँ अस्परीन है?

कम्पा०—जी है।

डाक्टर—पेपिन-पेप्सीन?

कम्पा०—है।

डाक्टर—टाका डायस्म?

कम्पा०—है

(प्रवेश—घन्नाजी और मन्नाजी)

घन्नाजी—जयरामजी की सरकार!

मन्नाजी—रामराम सा रामराम।

डाक्टर—हुँ—तो पेपिन पेपसिन टाका डायस्म तीनों हैं।

कम्पा०—जी।

डाक्टर—पेनाक्रियाटीन?

कम्पा०—है।

डाक्टर—अच्छा तो देखो नुसखा लिख लो। याद रख लोगे? ज़बानी?

कम्पाउडर—जी जी।

डाक्टर—अच्छा तो वन ग्रेन पेपिन, टू ग्रेन्स पेप्सीन, टू ग्रेन टाका डायस्टस, तीन ग्रेन्स पेनक्रीएटीन–तीन पुड़ियाँ ।

कम्पा०—भोट्टीक किब्ले ।

डाक्टर—जाइये ।

कम्पा०—भोत अच्छा ।

(प्रस्थान)

डाक्टर—ओह आप ? (सेठजी की ओर देखकर)

धन्नाजी—रामराम साव !

मन्नाजी—रामराम सरकार !

डाक्टर—वैठिये—वैठिये सेठ साहब !

मन्नाजी—नहीं नहीं खडे रहेंगे। उसमें कौन-सी वडी वात है।

धन्नाजी—हाँ हाँ—कौणसी वडी बात है ?

डाक्टर—नहीं नही वैठिये—वैठिये । वडे म्याँ ! कुर्सी

धन्नाजी—नहीं नही सरकार ! यहीं मजे में हैं । वेंच पर वैठ जाते हैं ।

मन्नाजी—हाँ हाँ यहीं वेंच पर मजे मे हैं ।

डाक्टर—वडे म्याँ ?

बडे म्याँ—हुजूर !

डाक्टर—इन पुड़ियों को मथुरा हलवाई के घर पहुँचा आना ।

बड़े म्याँ—मोट्ठीक फ़िरले ।

डाक्टर—अभी ही पहुँचनी चाहिए । दूसरी दवाई के लिए बोतल भी ले आना ।

बड़े म्याँ—बिला शक ! अभी ही पहुँच जायगी ख़िबले ।

डाक्टर—और बड़े म्याँ !

बड़े म्याँ—जी !

डाक्टर—एक पुड़िया इसी वक्त दी जाय !

बड़े म्याँ—ख़िबले ।

डाक्टर—बड़े दिनों में पधारना हुआ सेठजी ?

मन्नाजी—हाँ सा' विचार तो बहुत दिनों से किया पर यह धधा-रूजगार !

धन्नाजी—सच पूछो तो काम से फुरसत नहीं मिलती ।

डाक्टर—हाँ—यो तो मैं भी जानता हूँ । आप लोगों को काम न हो तो फिर और किसे होगा । मेरे लायक कुछ काम ?

मन्नाजी—हैं—हैं—हैं—आप तो ग़रीबपरवर हैं ।

धन्नाजी—आप तो हमारे मालिक हैं मालिक ।

डाक्टर—बड़े म्याँ ! ऊपर से पान-वान मँगवाओ तो ।

बड़े म्याँ—जी अभी मँगवाये ।

(प्रस्थान)

डाक्टर—और समाचार सुनाइये ।

धन्नाजी—आप की महरबानी चाहिये। क्यो मन्नाजी।

मन्नाजी—हाँ धन्नाजी। बिलकुल ठीक है। गरीबों पर रहम की निगाह चाहिये।

(प्रवेश—दो नोकर—हाथ में ढँके मिठाइयों के थाल लिये हुए)

डाक्टर—यह क्या ?

धन्नाजी—हँ—हँ सरकार कुछ भी नहीं। बच्चों के लिए मिठाइयाँ।

डाक्टर—पर इसकी क्या जरूरत है ?

मन्नाजी—वाह सरकार ! जरूरत कैसे नहीं। हमारे बच्चे नही खायँगे !

धन्नाजी—वाह साब ! बच्चे मिठाई न खायँगे तो फिर क्या हम लोग खायँगे !

डाक्टर—पर मैं इसकी जरूरत...

धन्नाजी—देखो डांगडर साब ! बच्चो की बात में आप मति बोलो। हाँ साब !

मन्नाजी—हाँ साब ! बच्चों की बात मे आप न बोलिये ! हाँ साब ! अरे क्या खड़ा है ? ले जा ऊपर !

डाक्टर—खैर !

(दोनों सेवको का सामने चला जाना)

डाक्टर—आजकल व्यापार कैसा है।

मन्नाजी—मामूली सा है।

धन्नाजी—आपसे एक बात

डाक्टर—हाँ हाँ कहिये कहिये।

धन्नाजी—बात तो आप जानते ही हैं—चबूतरेवाली। हमारी गली में वह चबूतरा न बनने पावे। मथुरिया हलवाई चबूतरा बनवाना चाहता है। यह कैसे हो सकता है।

मन्नाजी—हाँ साब! हमारे बाप हमारे चबूतरा न था—आज कैसे बन जाय?

धन्नाजी—कुछ भी हो जाय साब! पर चबूतरा बनने न पाय। हाँ साब!

डाक्टर—आपका कहना ठीक है—पर मुझे जगह पर जाकर मुआइना करना होगा। फिर कह सकता हूँ—अभी भला कैसे कुछ कहा जा सकता है।

धन्ना—मुआइना—मुआइना ठीक है—पर हम तो आपको जानते हैं। सब आपके ही हाथ है। आप तो हमारे मालिक हैं।

मन्ना—हाँ सा! आप ही तो मालिक हैं। क्यों धन्नाजी!

धन्नाजी—हाँ मन्नाजी!

डाक्टर—और आप फिक्र न करें। सब ठीक हो जायगा।

मन्ना—वाह साव ! कांई केणी ! आप ही का तो आसरा है।

(प्रवेश—वड़े म्याँ शशि के साथ। हाथ में पान की तश्तरी)

डाक्टर—लीजिये सेठजी पान !

धन्नाजी—अजी साव ! पान-वान की क्यों तकलीफ की।

मन्ना—हाँ साव ! पान की क्या जरूरत है ?

(प्रस्थान—शशि)

डाक्टर—बड़े म्यॉ ?

वड़े म्यॉ—हुजूर !

डाक्टर—स्कूल का जलसा कब होनेवाला है ?

वडे म्याँ—कल किबले !

डाक्टर—तो हेडमास्टर साहब से कहा जाय कि जलसे के सभापति धन्नाजी और मन्नाजी को बनाया जाय।

वड़े म्यॉ—बहतर है हुजूर।

धन्नाजी—नहीं नहीं सरकार ! यह काम तो आपका है।

मन्नाजी—हाँ—आपही का है।

डाक्टर—वाह ! इसी शेरगढ़ के सेठ साहब गाँव के सार्व-जनिक कार्यों में मदद न करेंगे तो भला कौन करेंगे ? ऐसा नहीं हो सकता। आपको मीटिंग में आना होगा। समझे ?

धन्नाजी—हें-हे।

डाक्टर—नहीं साहब यह तो अच्छा काम कर रहे हैं। क्यों बड़े म्याँ!

बड़े म्याँ—बिलकुल ठीक फरमाते हैं क़िबले।

डाक्टर—अच्छा सेठ साहब! तो आप तैयार रहिये! मुझे एक मरीज़ को देखने जाना है।

धन्ना—हाँ हाँ पधारिये! पधारिये।

मन्ना—ज़रूर। ज़रूर।

परदा गिरता है।

दृश्य चौथा

[मन्नाजी का घर । एक ओर शिला पड़ी है, पास ही पीसने का पत्थर । घर की चीज़ें अस्त-व्यस्त पड़ी हैं । एक ओर खटिया पड़ी है । हरिया बस्ता खोलकर पढ़ रहा है ।]

हरिया—हेड-मास्टर साहब ने कहा है, जलसे के लिए कविता याद करके लाना । पढ़ूँ, भाई पढ़ूँ,—और रट डालूँ ।

एक था बन्दर, छोटा-सा बन्दर,
रहता था अन्दर, शहर के अन्दर ।

शहर था अच्छा बहुत ही सुन्दर
नाम था उसका शहर बलन्दर ॥

(२)

शहर में खड़ा था सुन्दर मन्दर
उसके ऊपर रहता था बन्दर।
उसको काटने आया चकुन्दर
बोल उठा वो छू छै मतर ॥

(प्रवेश—तुलसीराम)

तुलसीराम—भग ! वाह रे मेरी भग ! वाह रे मेरी भग ! क्या भग की महिमा का बखान करूँ माई ! शिवपुराण में भी तो लिखा है :—

दग में इक दग भीम दग है।
नग में इक नग भारत नग है ॥
घग में इक घग शिव घग है।
इसी प्रकार—रग में इक रग भग रग है ॥
जो न पीये भग का ढक्कों
सो लड़कों से लड़की भला।
वाह रे मेरी भग ! वाह रे मेरी भग !!

सेठ साहब बोले, 'तुलसी राम रे ! मैंने कहा 'श्री सरकार।'

सेठजी बोले, 'आज जलसे में जाना है, जल्दी भंग तैयार कर डालना। मैंने कहा, 'जी सरकार।'

चल भई भंग पीस डालूँ। (भंग पीसता है)

हरिया—मैं कहता हूँ यह साली कविता ही याद नहीं होती। (फिर से पढ़ता है) कुछ समझ में ही नहीं आता। आज इस्कूल का सालियाना जलसा होनेवाला है। हेड-मास्टर साब ने कहा है, बन्दर की कविता याद करके लाना, पर साली याद ही नहीं होती।

तुलसी (ज़ोर से भंग पीसते-पीसते) हमारे वेद में, हमारे शास्तर में, हमारे पुराणों में भंग की बड़ी महिमा लिखी है। पुराने जमाने में शिवजी महाराज भंग के लोटे के लोटे ही नहीं, भग के घड़े के घड़े ही उड़ा जाया करते थे। और वो मोटे पेटवाला इन्द्र भगवान, अभी माँ के पेट से ही निकला था कि सोमरस के तालाब के तालाब उड़ा गया था।

हरिया—क्यों तुलसीराम ?

तुलसी—क्या है ?

हरिया—तो पहिले जमाने में सब लोग भंग पिया करते थे ?

तुलसी—हाँ, हाँ ! जैसे तू बैठे-बैठे गन्ना चूसा करता है, वैसे ही सब लोग भग पिया करते थे।

हरिया—अच्छा ? तो भंग कैसी लगती है ?

तुलसी—वाह ! बहुत अच्छी। मीठी-मीठा चरकी-चरका।
शिवपुराण में भी तो लिखा है —

मीठी मीठा, चरकी चरकी
हल्की हल्की पुरकों जैसी।
अच्छी अच्छी, अमृत जैसी,
ऐसी भग ऐसी भग ॥

(२)

ठण्डी ठण्डी, बर्फ के जैसी
घोली घोली दूध के जैसी।
मीठी मीठी अमृत जैसी
ऐसी भग ऐसी भग ॥

(३)

पतली पतली लस्सी जैसी
घोला घोली, गाय के जैसी।
मीठी मीठा अमृत जैसी
ऐसी भग ऐसा भग ॥

हरिया—मुझे पिलाओगे।
तुलसी—ना भई सठ लाख शराब हो जायें तब ?
हरिया—मैंने सुना है तुम्हें भग बहुत अच्छी लगती है।

मैंने सुना है—हमारे मास्टर साहब कहते थे कि भंग तो शिवजी महाराज भी पीते थे। देखो न यह साली कविता ही याद नहीं होती। रटते रटते तमाम दिमाग खराब हो गया—पर ..
मैं पूछता हूँ, तुम भी पुराने जमाने में पढे थे ?

तुलसी—हाँ, हाँ। हमारी गाँव की इस्कूल में—पर तुम्हारी तरह नही—हाँ।

हरिया—कैसे पढे थे ? कहो तो ?

तुलसी—कैसे पढे थे ? देखे ऐसे।

कक्का रे केवड्यो, खखा रे खेवट्यो।
गगा रे गधेड़ो, घघा रे घाघरो॥
और ठठा रे ठठरो, ढढा रे ढंढेरो।
लला रे रे लखेरो, चचारे चचेरो॥

हरिया—हा—आ आ—हा—आ—आ। बड़ा मज़ा आता होगा। पर मुझे भंग

तुलसी—अच्छा अच्छा! परवा मत करो—जरूर पिला-ऊँगा। पर किसी से कहना मत कि तुलसी ने भंग पिलाई है।

हरिया—नहीं, नहीं, मैं ऐसा उल्लू थोड़े ही हूँ।

तुलसी—अच्छा, अच्छा तो मुझे भंग पीस लेने दे।

(पीसने लगता है—फिर पीसते पीसते)

भंग को पीसता हूँ और मेरे रोम-रोम खड़े हो जाते हैं।

और पिसी हुई भग का लोटा सामने रखता हूँ, और मन बदर की तरह कूदने लगता है कूदने। और जब भग का लोटा चढ़ा जाता हूँ तब तो मन मोरे का चोच का तरह नाचने लगता है, नाचने।

(प्रवेश—मन्नाजी)

मन्ना—अरे हरिया ?

हरिया—कई है ?

मन्ना—अरे तुलसी ?

तुलसी—सरकार।

मन्ना—अरे भई मेरा वही खाता कहाँ है ?

तुलसी—सदूक में रख दिया सरकार !

मन्ना—भग पीस डाली ?

तुलसी—पीस रहा हूँ सरकार ! अभी पीस डालता हूँ, सरकार।

मन्ना—पीस डालता हूँ सरकार ! तुम्हें पता नहीं, हमें जलसे में जाना है ? तुम बिलकुल गधे हो।

तुलसी—ठीक है सरकार !

मन्ना—अच्छा बताओ तो हरिया की बीजी कहाँ है ?

तुलसा—हरिया का बीजी सरकार ?

मन्ना—सुनते नहीं बहरे हो क्या ?

तुलसी—नहीं सरकार ।

मन्ना—सरकार सरकार क्या लगा रक्खी है ? कहाँ है सेठाणीजी ।

(प्रवेश—सेठाणीजी)

सेठाणी—यारी यारी । कंई काम है नी ?

सेठ—मैं—मैं—मैं पूछता था तुम कहाँ गई हो ।

सेठाणी—मूं सरग मे गीछी—थां के कई काम—थां के कई काम—बोलो कई काम ?

सेठजी—नहीं—नहीं—कोई खास काम नहीं था ?

सेणाठी—तो फिर मारो कंई काम ? मूं सब जाणूं हूँ—ये लाड़ाजी वण कठे चाल्या ?

सेठजी—नहीं—नहीं—जरा बाहर जा रहा रहा था—पर देखो तो—तुम भीतर तो जाओ—धन्नाजी आ रहे होंगे ।

सेठाणी—सरग में जाय थांको धन्नोजी ।

(प्रवेश—धन्नाजी । प्रस्थान—सेठाणीजी)

धन्नाजी—ये सुसरे शहर के लोग—मिल जाँय तो टाँग ही तोड़ डालूँ—गरदन ही मरोड़ डालूँ ।

मन्ना—आइये, आइये धन्नाजी । क्या हुआ ? क्या हुआ ?

धन्नाजी—पूछते हो क्या हुआ ? इन लोगों को पता नहीं—हम इस्कूल के जलसे मे जा रहे है—प्रसीडंट बनने रास्ते में आ

रहा था, कि किसी सुसरे ने ऊपर से चौके का गड़ा पानी सिर पर डाल दिया ! हमने कहा—अरे कौन है यह सुसुरा ? देखता नहीं आँखें फूट गई हैं—तो ऊपर से जवाब मिलता है अंधा है अंधा—देखकर ही नहीं चलता ।

मन्ना—राम राम राम राम । फिर ?

घन्नाजी—फिर ! फिर ? फिर क्या ! मैं वापिस घर चला आया । तो मुन्नों की माँ कहती है 'कैसे वापिस आगये जी ?' मैंने कहा—देखती नहीं—आँखें फूट गई हैं ! तमाम सुथापा और कमाज़ तो खराब हो गया है ।' तो जवाब मिलता हैं आँखें फूट गई थीं । अन्धों की तरह चलते हो ।'

मन्ना—फिर ! फिर ?

घन्ना—फिर क्या ! दूसरे कपड़े पहिन यहाँ चला आया । सोचा चलें भई नहीं तो देर हो जायगी ।

मन्ना—अच्छा—अच्छा । अच्छा किया । भग पियोगे ?

घन्नाजी—भग—रामराम रामराम भग ?

मन्नाजी—हाँ हाँ भग । भग तो अच्छी चीज़ है, पीनी चाहिये ।

घन्ना—अच्छा ? लाओ तो पी लें !

मन्नाजी—अरे तुलसीराम भग लाना रे !

तुलसी—आया सरकार ।

ग्नाजी (पीते-पीते) वाह भई भंग तो बडी अच्छी बनी है।

मन्नाजी—अच्छा तो अब चलना चाहिये।

धन्ना—हॉं, हॉं चलना चाहिये।

(प्रस्थान)

तुलसी—गये, सरकार गये। अरे हरिया भंग पीनी है?

हरिया—पिलाओगे?

(प्रवेश—शशि और शिरीष)

शिरीष—अरे हरिया?

हरियो—भैयाजी।

शिरीष—अभी तक क्या कर रहे हो? रिहर्सल करने नहीं आना?

शशि—वाह इतनी देर लगाते हो?

शिरीष—देखो मै घर जाकर सूट पहनकर आता हूँ। तुम दोनो स्कूल मे आओ। देर न करना।

हरिया—जी! पधारिये अभी आते हैं।

(प्रस्थान—शिरीष)

शशि—चले अपन भी।

हरिया—भंग तो पी ले फिर चलेंगे।

शशि—भग—पागल हो जाओगे तब?

हरिया—उँह ! भंग से भी कोई पागल होता है !

शशि—अच्छा ?

हरिया—अच्छा तो तुलसी

तुलसी—देख ठहर जा। मुझे भगवान शंकर को भोग लगा लेने दे फिर दूँगा। (लोटे को सामने रख, चमची से पीटते हुए गाता है)

जय शंकर देवा, प्रभु जय शंकर देवा।
आनंद कंद अविनाशी जय शंकर देवा।—ॐ जय
भाँग पीओ, गाँजा पीओ पीओ चरस देवा—प्रभु पी०
मस्त बन जाओ पीकर नाचो तुम देवा—ॐ जय०
भाँग पीसी भाँग छानी, लोटे में राखी—प्रभु लोटे०
आकर पी जाओ तुम नाचो तुम देवा—ॐ जय०
मोटा तुलसीराम गावे ये आरति सारी—प्रभु ये०
जो जन गावे आरति कष्ट जावें दूरा—ॐ जय०
बम भोला ! बम भोला !
शंकर ! काँटा लगे न कंकर !!

हरिया !

हरिया—जी !

तुलसी—ले पी जा ! और शशि भैया—यह तुम पी जाओ !

हरिया—(पीकर) बस ? और दो ।

तुलसी—नहीं बस !

हरिया—इतनी सारी भंग बची है, उसका क्या करोगे ?

तुलसी—वाह अब हमारे भाग न लगेगा !

बम बोला, बम बोला ।
शंकर ! काँटा लगे न कंकर ॥

(पीता है ।)

(प्रवेश—सेठाणीजी)

सेठजी—काईं उधम मचा राख्यो है जी थाने ? एँ ?

तुलसी—ओह माँसा ! भंग पी रहा था !

सेठाणी—भागो सब मारा घर सूँ ।

(हरिया और शशि भाग जाते हैं ।)

परदा गिरता है ।

जलस उससे न किये जायँगे। आजकल के लड़के-लड़कियाँ सिर पर चढ़े जा रहे हैं सिर पर।

(प्रवेश—मुन्नू)

मुन्नू—नमस्ते हेड मास्टर साब।

हेड०—नमस्ते। चुन्नू कहाँ है ?

मुन्नू—जी आ रहा है।

हेड०—शशि और हरिया ?

मुन्नू —साब वे तो इमली के नीचे गोलियाँ खेल रहे हैं।

हेड —जाओ उन्हें बुलाकर लाओ। देखो जल्दी आना।

मुन्नू—जी। अभी आया।

(प्रस्थान। प्रवेश—चुन्नू)

चुन्नू—परणाम हेड मास्टर साब।

हेड०—प्रणाम। कांता कहाँ है ?

चुन्नू—साब सो रही है।

हेड०—सो रही है ? अभी तक ? जाओ बुलाकर लाओ। जल्दी करो। जाओ।

चुन्नू—जी। यह गया।

(प्रस्थान)

हेड-मा०—मियाँ तबलची ?

तब०—जिबबे।

हेड-मा०—लड़के तब तैयार है ?

तब०—बिलाशक क़िबले ।

हेड—हुँ । बैठ जाइये । ये लड़के लोग ! टाइम की पाबन्दी ही नहीं जानते । चार बजने को आये है—और अभी तक कोई नहीं आया । रिहर्सल न जाने कल ख़तम होगा । बडी परेशानी है (टहलते हैं—पैरों को पछाडते है) मुन्नू गया, और अभी तक नहीं आया । चुन्नू गया और अभी तक नहीं आया । बडी परेशानी है । इन लडको के मारे नाक में दम है ।

(प्रवेश—शिरीष और हारमुनियम मास्टर)

शिरीष—अजी हेड-मास्टर साब ! यह क्या ? अभी कुछ इंतज़ाम नहीं हुआ ?

हेड-मा०—ओह ! आइये आइये शिरीष बाबू । मैं आप ही की तो राह देख रहा था । देखो न लडके लोग अभी आ रहे हैं—और रिहर्सल की देख-भाल तो भला तुम्हें ही करनी होगी ।

शिरीष—(हाथ की छड़ी मेज़ पर फटकारते हुए) हाँ, हाँ ! वो तो मैं सब देख लूँगा—पर आपके लड़के तो आने दीजिये । मेरे ख़याल से यहाँ पर कोई पंक्टुआलिटी तो जानता ही नहीं । हमारी शहर की स्कूल में अगर इस तरह देरी हो जाय तो लड़कों

को डिसमिस कर दिया जाय। हमें यह बेस्ट ऑफ टाइम पसंद नहीं।

हेड०—आपका कहना बिलकुल दुरुस्त है। पर सच पूछो—तो इस गाँव के लोग-बाग ही ऐसे हैं। आज कल के लड़के बिलकुल हापलेस—यूँ समझिये। हमारे ज़माने में हमने हमारे मास्टरों की क्या-क्या सेवा की है—क्या-क्या बरदाश्त किया है—हम ही जानते हैं। एकसुबह उठकर मास्टर साब के घर का झाड़ू लगाते, पानी खींचते—कभी-कभी—जब मास्टरनीजी बीमार हों या मैके गई हों—रोटी भी पकाते और रात के वक्त मास्टर साब के पैर भी दबाते!

शिरीष—सच है पर हमारे भी तो जलसे होते हैं। गई साल ही हमारी हाईस्कूल में जलसा हुआ था और मैं था सेक्रेटरी। किसकी मजाल है एक मिनट भी देर से आय। और जनाब उस समय मैंने भी एक गायन बनाया था और गाया था।

हेड०—अच्छा? बताओ तो कैसा बनाया था?

शिरीष—जी! बहुत अच्छा अभी ही लीजिये। मगर तबलची ज़रा दादरे का ठेका बजाना—और हारमोनियम मास्टर ज़रा धीरे बजाना।

दोनों—बहुत अच्छा गरीबपरवर।

शिरीप—(खाँसकर) हॅं सुनो।

लव की बोट चली ओशन में मेरी,
छोटी सी बोट चली वोटर मे मेरी—टेक
लव का ओशन, लव की बोट,
लव ट्रावेलर, लव ही सेलर,
तुझ बिन, हू इज़ अवर प्रोटेक्टर—धिसबोट
यह वोट—चली ओशन में

हेड-मा०—वाह भई वाह!

(प्रवेश—बड़े म्याँ)

बड़े म्याँ—आदाब अर्ज मास्टर साब!

हेड०—ओह! आइये, आइये बड़े मियाँ। डाक्टर साहब तैयार हैं।

बड़े म्याँ—तैयार तो हो रहे हैं—पर आपको याद फरमाते है?

हेड०—जी मुझे?

बड़े म्याँ—जी हाँ! पूछते थे नाज़िम साहब जलसे में आनेवाले हैं कि नहीं।

हेड०—आपने कहा न कि वे दौरे मे तशरीफ ले गये हैं।

बड़े म्याँ—जी हाँ। और थानेदार साहब के बारे में भी फरमा दिया है।

हेड०—वाह बड़े म्याँ वाह! क्या तारीफ़ की जाय आपकी। पर पूछता हूँ—मुझे क्यों याद फ़रमाया?

बड़े म्याँ—ख़ास तो पता नहीं।

हेड-मा०—तो मामूली तो पता होगा।

बड़े म्याँ—हाँ शायद आज के जलसे में घ नाजी म नाजी को प्रसिडेंट बनाया जाय—ऐसा कहना हो आपसे।

हेड-मा०—घनाजी-मनाजी प्रसिडेंट?

बड़े म्याँ—हाँ शायद।

हेड-मा०—पर सेठ लोग?

बड़े म्याँ—अब यह तो—

हेड मा०—ख़ैर ख़ैर चलो चलो। चलें—जो डाक्टर साहब फ़रमायँगे वही होगा। उसमें कौन-सी बड़ी बात है? अरे पर शिरीष बाबू?

शिरीष—फ़रमाइये।

हेड-मा०—अरे देखा भई। ये अपने लड़के लोग आ जायँ न तो ज़रा रिहर्सल विहर्सल कर लेना—कहीं गोलमाल-वोलमाल न हो जाय।

शिरीष—ओह, आप परवाह न कीजिये—शौक़ से पधारिये।

(प्रस्थान—हेड मास्टर और बड़े म्याँ)

शिरीष—अजी तबलचीजी?

तबल०—क्षिबले ।

शिरीष—मैं अभी आता हूँ । लडके लोग आवें तो बिठा देना ।

(प्रवेश—तुलसीराम)

तुल०—शंकर ! काँटा लगे न कंकर ! वडी दूर से चला आ रहा हूँ—पैर टूटे जा रहे हैं—साँस जोरों से चल रहा है—हाथ-पैर टूटकर गिरने को हैं —पर पता ही नहीं चलता । अब क्या करूँ कहाँ जाऊँ—कहाँ ढूँढूँ । शंकर काँटा लगे न कंकर !!

तबलची—ए म्याँ ? किसका काम है ?

तुलसी—म्याँ तू—और म्याँ तेरी नानी ! हमसे म्याँ कहता है ।

तबल०—पर क्षिबले ! किसका काम है ?

तुलसी—काम ? अहाहा ! काम ? (हिचकियाँ खाता है) अहाहा !

हारमो०-मा०—अरे मास्टर ! भाँग-वाँग पी रखी है क्या ?

तुलसी—भाँग—भाँग—अहाहा क्यों आया था ? हाँ, हाँ—सेठाणीजी ने कहा, 'तुलस्यारे' ? मैंने कहा, 'माँ साव !' सेठाणीजी बोलीं—'हरियो कठे हेरे ?' मैंने कहा—माँ साव ! इस्कूल में गया होगा, बो कहा 'बुलालाउणी'—तो मैं दौडा चला आ रहा हूँ । न रुका हूँ न ठहरा हूँ—न साँस ली है—न पानी पिया है । न

दम लिया है न गाँजा पिया है। न भंग पी है, न रोटी खाई है। न भूख लगी है—बस बस भागा ही चला आ रहा हूँ—भागा हु-हु हु।

तबल०—यहाँ हरिया बरिया कोई नहीं है।

तुल०—मैं उसे ढूँढ निकालूँगा। आता हूँ—पाताल से उस पकड़ लाऊँगा। नरक से सरग से—कहीं से भी।

(प्रस्थान। प्रवेश—हरिया और शशि)

शशि—क्या भंग पान का मज़ा आया यार।

हरिया—हाँ यार! और गोलियाँ खेलने का? पर ए अब काम—जो हरमुनिया मास्टर और तबलचीजी तो आगये। पर हेड-मास्टर साब कहाँ?

शशि—हाँ वा! अभी हेड-मास्टर साब तो आये ही नहीं।

हरिया—ये मॉटर लोग सब के सब ऐसे ही होते हैं। खुद तो टाइम में आते नहीं और हमें तंग करते हैं।

(प्रवेश—चुन्नू, मुन्नू और कान्ता)

चुन्नू—मैं डाक्टर बनूँगा।

मुन्नू—नहीं मैं बनूँगा।

कान्ता—नहीं मैं बनूँगी।

चुन्नू—वाह तुम कैसे बन सकते हो?

मुन्नू—और तुम कैसे बन सकते हो?

कान्ता—वाह ? तुम कैसे बन सकते हो ?

(प्रवेश—शिरीष बेंत को घुमाते हुए)

शिरीष—(बेत को पास के टेबल पर ठपकारते हुए) साइ-लन्स ! यह क्या शोरगुल मचा रहे हो जी ?

(सब चुप हो जाते हैं)

शिरीष—कहाँ थे तुम लोग ?

सब—यहीं थे जी ।

शिरीष—चलो सब बैठ जाओ—रिहर्सल के लिए तैयार !

सब—जी ।

शिरीष—हरिया !

हरिया—जी ।

शिरीष—तुम्हारा पार्ट क्या है ?

हरिया—बंदर की कविता बोलना ।

शिरीष—याद है ?

हरिया—है ।

शिरीष—खड़े होकर बोलो ।

हरिया—जी । (बोलता है)

एक था बंदर, छोटा-सा बदर,
रहता था अंदर, शहर के अंदर ।

शहर था अच्छा बहुत ही सुंदर,
नाम था उसका शहर कलंदर॥

सुन्नू—मास्टर साब ?

सुन्नू—मेरी गोली छीन ली।

शिरीष—साइलन्स क्यों शोर मचाते हो जी ? आग हरिया।

हरिया—शहर में खड़ा था सुन्दर मंदर
उसके ऊपर रहता था बंदर।
उसको काटने आया चकुंदर
बोल उठा वो छू ले मंतर॥

शिरीष—Well done—well done सुन्नू !

सुन्नू—जी।

शिरीष—तुम्हारा पार्ट ?

सुन्नू—बेटा भयजे मति।

शिरीष—अच्छा सुनाओ। हारमोनियम और तबले के साथ।

सुन्नू—जी। (गाता है)
बेटा भयजे मति हो, बापवा मांगि खावेंगो।
बेटा भयजे मति हो बापवा मौगि खावेंगो॥
डागला प बठक भइ डागला पे बैठक—
डागला प (अटकता है।)

शिरीष—फिर ?

चुन्नू—सा—साव—भूल गया।
कान्ता—मैं वताऊँ साव ?
शिरीष—हाँ।
कान्ता—मक्का झूड़ेंगा।
चुन्नू—हाँ साव—हाँ साव याद आया।
डागला पे बैठके हाँ, डागला पे बैठके
मक्का भूडेगा—हाँ—आँ—ऑ—वेटा०
शिरीष—बैठ जाओ। तुम गधे हो—कुछ नहीं आता। कान्ता!
कान्ता—जी।
शिरीष—तुम्हारा क्या पार्ट है ?
कान्ता—जी मेरा—ट्विंकिल ट्विंकिल लिटिल स्टार।
शिरीष—याद है ?
कान्ता—जी याद है।
शिरीष—वस एक ही पार्ट है ? और नहीं है ?
कान्ता—है।
शिरीष—कौन-सा ?
कान्ता—नाटक में—गायन गाने का।
शिरीष—अच्छा उसे शुरू करो।
शशि—और भाई साब मेरा ?
शिरीष—कौन बोला ?

हरिया—शशि भैया !

शिरीष—शशि इधर आओ ! क्यों बीच में बोलते हो ! (कान ऐंठकर) जाओ बैठ जाओ।

शशि—(धीरे से) आज माताजी से ^ म कर दूँ तो—

शिरीष—हाँ—कान्ता शुरू करो।

मुन्नू—मुन्नू सो जा। कान्ता गायब

कान्ता—चिड़िया काटने

मुन्नू—गलत-गलत—मोट

शिरीष—चुप रहो जी—तुम हें कान्ता शुरू करो।

कान्ता—(गाती है)

चिड़िया चूँ चूँ

मुन्ना आग जा

चिड़िया चूँ चूँ

(

म्याँ, घ नाची

शिरीष—ओ

हेड०—अरे ! अब

टोपी चढ़ा !

(प्रवेश—गोपी चंदा)

गोपी—सरकार !

हेड०—क्या - सरकार सरकार लगा रक्खी है—अभी तक कुर्सियाँ नहीं जमीं । तुम बिलकुल गधे हो । क्या खड़े हो उल्लू की तरह । चलो जल्दी करो जल्दी ।

(कुर्सियों के जमाने का आवाज़ होता है—कुर्सियों पर सब लोग बैठ जाते हैं—बीच की दो कुर्सियाँ खाली हैं)

हरिया—शशि भैया ?

शशि—हाँ, मेरे भैया !

हरिया—अरे भैया ! यह आसमान क्यों घूम रहा है ?

शशि—और और यह धरती माता क्यों नाच रही हैं—आँखों के सामने ये काले-काले बादल क्यों मँडरा रहे हैं ?

शिरीष—चुप रहो जी । बातें मत करो ।

हेड-मास्टर—उपस्थित सज्जनो ! अत्यंत दिन है हर्ष का आज कि आप सब लोग हमारी स्कूल में पधारे हैं—और इधर तशरीफ लाकर हमारे स्कूल को पवित्र-पाक किया है ।

धन्नाजी—मन्नाजी ।

मन्नाजी—हाँ धन्नाजी ।

धन्ना—यह कौन-से पाक की बात है जी ?

मन्नाजी—शायद गरमी के पाक की या ठंडी के ।

हरिया—शशि भैया।

शिरीष—शशि, इधर आओ! क्यों बीच में बोलते हो? (कान ऐंठकर) जाओ बैठ जाओ।

शशि—(धीरे से) आज माताजी से शिकायत न कर दूँ तो—

शिरीष—हाँ—कान्ता शुरू करो।

मुन्नू—मुन्नू सो जा। कान्ता गायन शुरू कर दे।

कान्ता—चिड़िया कागने को आई

मुन्नू—ग़लत-ग़लत—मास्टर साब ग़लत!

शिरीष—चुप रहो जी—तुम बीच में बक-बक मत करो। हूँ कान्ता शुरू करो।

कान्ता—(गाती है)

चिड़िया चूँ चूँ करने लागी मुन्ना जाग जा रे
मुन्ना जाग जा रे—मुन्ना जाग जा रे।
चिड़िया चूँ चूँ करने लागी—

(प्रवेश—हेडमास्टर साहब डाक्टर साहब बड़े म्याँ धन्नाजी मन्नाजी और गाँव के पाँच-दस लोग।)

शिरीष—ओ—आप लोग पधार आये?

हेड०—अरे! अब तक कुर्सियाँ नहीं आईं। गोपी चंदा। गोपी चंदा।

(प्रवेश—गोपी चंदा)

गोपी—सरकार !

हेड०—क्या - सरकार सरकार लगा रक्खी है—अभी तक कुर्सियाँ नहीं जमीं। तुम बिलकुल गधे हो। क्या खड़े हो उल्लू की तरह। चलो जल्दी करो जल्दी।

(कुर्सियों के जमाने का आवाज़ होता है—कुर्सियों पर सब लोग बैठ जाते हैं—बीच की दो कुर्सियाँ खाली हैं)

हरिया—शशि भैया ?

शशि—हाँ, मेरे भैया !

हरिया—अरे भैया ! यह आसमान क्यों घूम रहा है ?

शशि—और और यह धरती माता क्यों नाच रही हैं—आँखों के सामने ये काले-काले बादल क्यों मँडरा रहे हैं ?

शिरीष—चुप रहो जी। बातें मत करो।

हेड-मास्टर—उपस्थित सज्जनो ! अत्यंत दिन है हर्ष का आज कि आप सब लोग हमारी स्कूल में पधारे हैं—और इधर तशरीफ लाकर हमारे स्कूल को पवित्र-पाक किया है।

धन्नाजी—मन्नाजी।

मन्नाजी—हाँ धन्नाजी।

धन्ना—यह कौन-से पाक की बात है जी ?

मन्नाजी—शायद गरमी के पाक की या ठंढी के।

घन्ना—ठीक है ठीक है।

हेड-मा०—और अधिक खुशी होने की तो यह बात है कि हमारे शहर गढ़ की म्युनिसीपालिटी के प्रेसिडंट साहब—श्रीमान् डाक्टर साहब ने आज हमारी स्कूल के जलसे में पधारने की मेहरबानी की है।

(तालियाँ बजती हैं)

घन्ना—जरूर जरूर ?

मन्ना—मेहरबानी की—मेहरबानी की।

हेड-मा०—हमारा तो विचार था कि आज के जलसे का भार हमारे डाक्टरसाहब पर ही डाल दिया जाय और हम निश्चित हो जायँ—

घन्ना—जरूर जरूर !

मन्ना—हो जायँ—हो जायँ !

हेड मा —पर आज के जलसे का नेतृत्व हमारे शेरगढ़ के मशहूर सेठसाहब घन्नाजी और मन्नाजी स्वीकर करें ऐसी दलील में आप लोगों के सामने पेश करता हूँ। मैं आशा करता हूँ और मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे आज के जलसे के सभापति का स्थान लेकर मुझे अनुगृहीत करेंगे।

घन्ना—मन्नाजी ?

मन्ना—हाँ घन्नाजा।

धन्ना—क्या करने का है ?

मन्ना—रामजी जाने ।

धन्ना—खड़े होकर कुछ बोलें ।

मन्ना—हाँ - हाँ ।

धन्ना—क्या बोलें ?

मन्ना—जो भी मन में आवे ।

धन्ना—अच्छा तो मैं बोलता हूँ ।

मन्ना—नहीं मैं बोलता हूँ ।

धन्ना—अच्छा तुम बोलो ।

मन्ना—नहीं नहीं, पहले तुम बोलो ।

धन्ना—नहीं पहले तुम ।

मन्ना—नहीं पहले तुम ।

धन्ना—अच्छा मैं बोलता हूँ ।

मन्ना—अच्छा तुम रहने दो—मैं ही बोल डालता हूँ ।

डाक्टर—आप दोनों इन खाली कुर्सियों पर पधारिये ।

धन्ना—नहीं नहीं सरकार यहीं मजे में हैं । क्यों मन्नाजी ?

मन्ना—हाँ धन्नाजी । बिलकुल ठीक है यहीं मजे में हैं ।

डाक्टर—नहीं नहीं आपको यहाँ आना ही पड़ेगा ।

धन्ना—अच्छा । अच्छा । आपका हुकुम बाला !

मन्ना—जरूर जरूर !

(दोनो खाली कुर्सियों पर बैठ जाते हैं)

धन्नाजी—डागदर साहब ! हेड मॉटूसाब ! छोरा छोरी श्रो ! हमें कुछ बोलणा चालणा नहीं श्राता है। डागदर साब के हुकुम से हम दानो धन्नाजी मन्नाजी इन कुर्सी पर बैठ गये हैं। हम तो गँवार श्रादमी हैं। गादी तकियों पर बैठनेवाले हम तो नाचे भी ज़मीन पर बैठ जाते पर खैर कुर्सी पर बैठ गये। श्रब—श्रब—मन्नाजी श्रौर क्या कहूँ।

मन्नाजी—हाँ हाँ ठीक है चलने दो—चलने दो।

धन्ना—तो श्रब जो कुछ काम हो—छोरा छोरी श्रो—शुरू कर दो। देरा मत करो। क्यों ठीक है न मन्नाजा।

मन्ना—हाँ हाँ ठीक है। चलने दो। चलने दो।

हेड-मा०—श्रच्छा तो बच्चो ! श्रपना काम शुरू करो। कान्ता।

कान्ता—जी।

हेड मा०—शुरू करो।

कान्ता—Twinkle twinkle little star
How I wonder what you are,
Up above the sky so high
like a diamond in the sky.

धन्ना—शाबाश शाबाश !

डाक्टर—वेलडन—वेलडन। हिअर हिअर!

मन्ना—वाह घणो मजाको।

हेड-मा०—अच्छा शशि!

शशि—मास्टर साब फिर!

हेड—अच्छा—अच्छा। चुन्नू।

चुन्नू—जी—गाता हूँ।

बेटा भणजे मति हो, आपण माँगी खावेगा।

" " " "

डागला पे बैठके, भई डागला पे बैठके

मक्का खावेगा—हाँ—बेटा भणजे

डाक्टर—वेलडन—वेलडन (तालियाँ)

धन्ना—मक्का खावेगा—वाह वाह!

मन्ना—घणो मजाको! वाह सा वाह।

हेड-मा०—हरिया!

हरिया—मांटर साब।

हेड-मा०—बंदरवाली कविता। सुनिये साहबान! यह कविता ख़ास बडे म्याँ ने बनाई है—बडी अच्छी है—गौर से सुनिये।

हरिया—(लडखडाता हुआ खड़ा होता है)

हेड०—अरे? (स्वगत) पैर क्यों लडखडा रहे हैं?

हरिया—बोलूँ साब ?

हेड—हाँ—हाँ।

हरिया—शुरू कर दूँ क्या साब ?

हेड—हाँ देर मत करो।

हरिया—ला शुरू कर देता हूँ पर साब कविता बोलूँ ?

हेड—हाँ कविता।

हरिया—कविता ही और कुछ नहीं साब ?

हेड—सुनते नहीं ?

हरिया—ला हाँ कम सुनाई देता है। लो सुनिये शुरू करता हूँ।

आकाश बदरों से छाया हुआ है। पानी में आकाश और बादलों से घिरा है। पृथ्वी पर असंख्य बदरों का टापू खड़ा है।

हेड-मा०—(स्वगत) अरे रे ! यह क्या कर रहा है कविता बोल रहा है कि तमाशा कर रहा है।

हरिया—आकाश में घनघोर गर्जना है और पेट में भूख लगी है। बदर पान चबा रहा है।

हेड—(धीरे) अरे शिरीष बाबू प्रोम्ट करो प्रोम्ट।

शिरीष—हरिया ! एक था बदर छोटा-सा बदर !

हरिया—हाँ—हाँ—ठीक तो है।

एक था बंदर, छोटा-सा बंदर।
रहता था अंदर, पेट के अंदर॥

शिरीष—पेट नहीं शहर।

हरिया—हाँ—हाँ शहर!

एक था बंदर, छोटा-सा बंदर।
रहता था अंदर, शहर के अंदर॥
शहर था अच्छा बहुत ही सुंदर।
समुंदर, जलंदर, चकुंदर, मंदर॥

(प्रवेश—तुलसीराम)

तुलसी—शंकर! काँटा लगे न शंकर!

हेड-मा०—अरे अरे? यह कौन? तमाम जलसा खराब हुआ जा रहा है।

तुलसी—अर—र-र! आसमान टूटा जा रहा है। दुनिया—पृथ्वी—आसमान चकर-चकर नाच रहा है, और तुलसीराम पवन और पानी पर उड़ा जा रहा है, हरिया को ढूँढने, मांसाब का हुकुम बजाने, सरपट भागा चला जा रहा है।

हेड-मा०—शिरीष—शिरीष। निकालो इस आदमी को।

शिरीष—ए—निकल बहार!

तुलसी—ए—कौन निकाल सकता है तुलसीराम को!

आसमान से विमान उतर रहा है—देखो देखो सब—भगवान बुलाते हैं—हरिया—हरिया—सेठाणीजी ने कहा 'तुलस्या रे ?' मैंने कहा मासा।

घन्ना—अरे यह तो तुलसी।

मन्ना—बाप रे ! अब तो कह देगा सेठाणीजी से।

तुलसी—सेठाणी जी ने कहा—'अरे—ऊँ—हरियाई—और ऊँ का बायाँ कान पकड़ के ला —मैंने कहा—लाया माँ साब।

मन्ना—बाप रे !

घन्ना—अभी हौंसला रक्खो हौंसला।

तुलसी—मैं दौड़ा चला आ रहा हूँ भागा चला आ रहा हूँ—उड़ता चला आ रहा हूँ—पर आसमान टूटता है—हरिया नहीं मिलता। अरे यह कौन—हरिया—हरिया।

हरिया—कहाँ है ?

तुलसी—चल तेरी मा

हेड०—उपस्थित सज्जनो ! माफ करना ! आज का जलसा यहीं से ख़तम होता है।

परदा गिरता है।